Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Paper

आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में राष्ट्रवाद की संकल्पना: महर्षि अरविंद और महात्मा गांधी का तुलनात्मक विश्लेषण

सीमा गहलोत

शोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * सीमा गहलोत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.16787859

सारांश

राष्ट्रवाद एक विचारधारा के रूप में आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन का एक महत्वपूर्ण घटक रहा है। यह न केवल भारत की स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा बना, बल्कि स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्वरूप को भी गहराई से प्रभावित करता रहा है। भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें प्राचीन संस्कृति, आध्यात्मिक परंपराओं और स्वदेशी चेतना में समाहित हैं, किंतु इसके आधुनिक स्वरूप को गढ़ने में अनेक विचारकों, नेताओं और क्रांतिकारियों की भूमिका रही है। इन विचारकों में महर्षि अरविंद और महात्मा गांधी का स्थान विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि इन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को न केवल एक राजनीतिक विचारधारा के रूप में देखा, बल्कि इसे एक आध्यात्मिक और नैतिक अवधारणा के रूप में भी प्रस्तुत किया।

प्रस्तुत शोध-पत्र इन्हीं बातों को रेखांकित करते हुए आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में महर्षि अरविन्द और महात्मा गांधी के राष्ट्रवाद के संदर्भ में उनके विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। यह शोध-पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

Manuscript Info.

- ✓ **ISSN No:** 2584- 184X
- ✓ **Received:** 18-07-2025
- ✓ **Accepted:** 02-08-2025
- ✓ **Published:** 10-08-2025
- ✓ **MRR:3(8):**2025;01-06
- ✓ **©2025, All Rights Reserved.**
- ✓ **Peer Review Process:** Yes
- ✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

गहलोत स. आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में राष्ट्रवाद की संकल्पना: महर्षि अरविंद और महात्मा गांधी का तुलनात्मक विश्लेषण. Ind J Mod Res Rev. 2025;3(8): 01-06.

कुंजी शब्द: राष्ट्रवाद, राजनीतिक चिंतन, भारत, महर्षि अरविन्द, महात्मा गांधी।

1. परिचय

राष्ट्रवाद एक ऐसी वैचारिक और भावनात्मक धारा है, जो किसी विशेष राष्ट्र या समाज के लोगों के बीच एकता, पहचान और स्वाभिमान का भाव उत्पन्न करती है। यह भावना एक साझा इतिहास, संस्कृति, भाषा, परंपरा, भूगोल और सामूहिक हितों के आधार पर विकसित होती है। राष्ट्रवाद का मुख्य उद्देश्य अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता, स्वायत्तता, और विकास सुनिश्चित करना होता है।

व्युत्पत्तिमूलक अर्थ के अनुसार, 'राष्ट्र' शब्द की उत्पत्ति लैटिन के 'नटियो' (natio) और 'नाशी' (nasci) से मानी जाती है, जिसका अर्थ है- 'से पैदा होना'। यही कारण है कि किसी राष्ट्र के प्रमुख संवैधानिक तत्वों में से एक समान और साझा स्थानिकता जो बंधुता या नृजातीयता के रूप में दिखाई देता है। कुछ विद्वान राष्ट्र का निरूपण मातृभूमि/पितृभूमि या जन्मभूमि के रूप में करते हैं। मातृभूमि और पितृभूमि पद यह इंगित करता है कि राष्ट्र किसी माता-पिता के जन्म स्थान के रूप में पहचाना

© 2025 सीमा गहलोत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

जाना चाहिए, जबकि जन्मभूमि से तात्पर्य है कि राष्ट्र वह स्थान है जहां कोई "निवास करता है"।[1]

आधुनिक विमर्श में, एक संप्रभु राज्य को राजनीतिक स्वायत्तता और राजनीतिक स्वाधीनता का मुख्य प्रतिनिधि माना जाता है। हैंस कोह्न का मानना है कि राष्ट्रवाद आवश्यक रूप से एक राष्ट्र-राज्य की उपस्थिति की मांग करता है।[2] जे. एच. हैंस का मानना है कि "....राष्ट्रीयता ऐसे व्यक्तियों का एक समूह है जो एक जैसी भाषा बोलते हैं, जो समान ऐतिहासिक परम्पराओं को संजोते हैं, और जो एक विशिष्ट सांस्कृतिक समाज का गठन करते हैं, या सोचते हैं कि वे गठित होते हैं, जिसमें अन्य कारकों के अलावा धर्म और राजनीति ने यद्यपि निरंतर रूप से आवश्यक भूमिका नहीं निभाई हो, महत्वपूर्ण भूमिकायें निभाई हैं।[3]

अर्नेस्ट रेनन के अनुसार, सामान्यतः साझा बंधुता, जाति, भाषा या भौगोलिक सीमाएं (दिक्) आदि एक राष्ट्र का निर्माण नहीं करते हैं, बल्कि यह साथ साथ जीने की इच्छा है जो कि इसके मूल में निहित है।[4] रेनन और जे. एस. मिल दोनों का मानना है कि जो समुदाय बाद में राष्ट्र के रूप में पहचाने जाने लगे वो वस्तुतः अतीत में संकटपूर्ण घटनाओं को जोड़कर और उनकी स्मृतियों से, और सामूहिक गर्व और अपमान, खुशी और पछतावे आदि के साथ उसमें भाग लेने के माध्यम से संगठित हुए थे। मिल के अनुसार, सहानुभूति, जो साधारणतः कुछ लोगों द्वारा दी जाती है, सरकारी/राजनीतिक ढांचा बनाने की इच्छा रखने वालों के बीच सहयोग के लिए आधार प्रदान करती है, जिसके तहत यह सहयोग प्रकट और विकसित होता है।[5] स्टीवन ग्रॉस्बी राष्ट्र को "वास्तविक और कल्पित अवधि की सामूहिक आत्म-चेतना के भूभागीय संबंध के रूप में परिभाषित करते हैं"।[6]

सामान्य तौर पर, राष्ट्रवाद का अर्थ इस विश्वास के रूप में समझा जा सकता है कि यदि लोगों का एक समूह कुछ सामान्य विशेषताओं जैसे जाति, इतिहास, परम्परा, भाषा, संस्कृति के आधार पर संगठित होता है, तो उन्हें स्वयं को एक संप्रभु राजनीतिक ढांचे के रूप में एकजुट होना चाहिए। किसी राष्ट्र/राष्ट्रीयता के अस्तित्व या किसी राष्ट्र/राष्ट्रीयता के अस्तित्व में विश्वास के साथ-साथ राजनीतिक स्वायत्ता की इस संबद्ध भावना को राष्ट्रवाद के घटक तत्वों के रूप में देखा जा सकता है।

इस प्रकार राष्ट्रवाद एक बहुआयामी राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विचारधारा है, जो एक विशेष राष्ट्र के प्रति निष्ठा, प्रेम, और पहचान की भावना को बढ़ावा देता है। यह अवधारणा न केवल राष्ट्र की स्वतंत्रता और संप्रभुता की माँग करती है, बल्कि उसमें रहने वाले नागरिकों के बीच सामूहिक पहचान और एकता को भी प्रोत्साहित करती है।

विश्व में राष्ट्रवाद के उदय का संदर्भ देखें तो 18वीं सदी की अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियों को अक्सर राष्ट्रवाद की पहली प्रभावशाली अभिव्यक्ति माना जाता है। 19वीं सदी के दौरान, राष्ट्रवाद लैटिन अमेरिका के नव स्वतंत्र देशों में प्रवेश कर गया और पूरे मध्य, पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी यूरोप में फैल गया। 20वीं सदी के पहले हिस्से में, एशिया और अफ्रीका में राष्ट्रवाद का उदय हुआ जिसमें भारत का राष्ट्रवादी स्वतंत्रता आंदोलन प्रमुख है।

भारत में राष्ट्रवाद का उदय:

भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन का प्रारंभिक चरण सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण से प्रेरित था, जिसमें भारतीय समाज को पुनः आत्मनिर्भर बनाने और औपनिवेशिक दासता से मुक्त करने की आकांक्षा थी। इस आंदोलन ने धीरे-धीरे राजनीतिक चेतना को जन्म दिया, जिसने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष को एक सशक्त दिशा प्रदान की। राष्ट्रवाद केवल एक राजनीतिक स्वतंत्रता की माँग तक सीमित नहीं था, बल्कि यह भारत की आत्मा और संस्कृति को पुनः जागृत करने का एक साधन भी था।

भारतीय राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक खोज को चार विभिन्न परिप्रेक्ष्य में समझना आवश्यक है। ये चार परिप्रेक्ष्य निम्न हैं:-

1. राष्ट्रवाद का औपनिवेशिक परिपेक्ष्य।
2. राष्ट्रवाद का राष्ट्रवादी परिपेक्ष्य।
3. राष्ट्रवाद का मार्क्सवादी परिपेक्ष्य।
4. राष्ट्रवाद का उपाश्रित परिपेक्ष्य।

भारतीय राष्ट्रवाद के सन्दर्भ में प्रथम, राष्ट्रवाद के औपनिवेशिक या साम्राज्यवादी या कैम्ब्रिज परिप्रेक्ष्य में इस तथ्य को नकारा जाता है कि यह औपनिवेशिक शक्ति के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक शोषण के विरुद्ध विकसित हुआ और मजबूत हुआ। इस परिपेक्ष्य की यह धारणा है कि साम्राज्यवाद ने भारत में सभ्यता और सामाजिक सुधार स्थापित किए और उसने भारत में आधुनिकता व नव जाग्रति के सिद्धांत व नियम स्थापित किए। इस परिपेक्ष्य की मान्यता के अनुसार भारतीय राष्ट्रवाद जन आन्दोलन न होकर अभिजन वर्ग की आवश्कता की उपज था। इस धारणा के अनुसार राष्ट्रवाद के अन्तर्गत जाति, धर्म के आधार पर समूहों का निर्माण किया गया जो भारतीय अभिजन वर्ग के निजी हितों की पूर्ति का साधन था।

द्वितीय, भारतीय राष्ट्रवाद के राष्ट्रवादी परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवाद को एक सत्ता व भावना के रूप में देखा गया जिसमें स्वतन्त्रता की भावना अन्तर्निहित थी। इस धारणा में साम्राज्यवादी विचारधारा को शोषक के रूप में माना गया है।

तृतीय भारतीय राष्ट्रवाद के पटल पर राष्ट्रवाद का मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य बाद में सामने आता है। यह कार्ल मार्क्स के मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित है तथा उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद को पूँजीवाद की चरम परिणति मानता है। व्लादिमीर लेनिन, रोजा लक्जमबर्ग ने इस धारणा को पोषित किया। इस परिपेक्ष्य ने राष्ट्रवाद को उच्चवर्गीय देशी बुर्जआ की विचारधारा के रूप में विश्लेषित किया है।

---

[1] ग्रॉस्बी, स्टीवन. (2005). नेशनलिज्म: अ वैरी शॉर्ट इंट्रोडक्शन. पृ.44-48.

[2] हैंस कोहन (2005) दी आईडिया ऑफ़ नेशनलिज्म: अ स्टडी ऑफ़ इट्स ऑरिजन्स एंड बैकग्राउंड, पृ.21-24.

[3] कोहन, हैंस. (2005). दी आईडिया ऑफ़ नेशनलिज्म: अ स्टडी ऑफ़ इट्स ऑरिजन्स एंड बैकग्राउंड, पृ.21.

[4] रेनन, अर्नेस्ट (2010) व्हॉट इज अ नेशन? इन नेशन एंड नेशनलिटी: थ्री एसेज. पृ.37; 53-54.

[5] मिल, जे. एस. (2010). ऑफ नेशनलिटी. इन नेशन एंड नेशनलिटी: थ्री एसेज, पृ.3

[6] ग्रॉस्बी, पृ.11-12

© 2025 सीमा गहलोत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भारत में रजनी पामदत्त और ए. आर. देसाई राष्ट्रवाद की इस धारणा के संस्थापक थे। उन्होनें भारतीय राष्ट्रवाद में किसानों व मजदूरों की भूमिका को अनदेखा किए जाने की बात की थी। इनके अनुसार स्वतन्त्रता आन्दोलन में राष्ट्रवाद की प्रकृति विरोधाभासी और द्वैधवृत्तिक है।

राष्ट्रवाद के चतुर्थ परिप्रेक्ष्य -उपाश्रित परिपेक्ष्य भी राष्ट्रवाद को शोषणकारी व प्रभुत्ववादी विचारधारा के रूप में व्याख्यित किया गया है। इसमें भी साम्राज्यवाद के साथ-साथ राष्ट्रवाद की शोषणवादी प्रकृति के आधार पर आलोचना की गयी है। मार्क्सवाद से भिन्नता रखते हुए यह धारणा मानती है कि भारतीय राष्ट्रवाद, जाति, लिंग, धर्म और नस्ल पर आधारित विभाजन के कारण शोषक प्रकृति का है और इसने ऐतिहासिक गौरवशाली व्याख्या में समाज के उपेक्षित अंश की उपेक्षा की है। ये उपेक्षित अंश-दलित, महिला, आदिवासी समाज की आवाज है।

उपरोक्त चारों परिपेक्ष्य में भारत के राष्ट्रवाद को धारणा के चार आयाम से हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि आधुनिक युग में यह मुख्यतः राष्ट्रवादी परिप्रेक्ष्य ही स्वीकार्य है। यद्यपि राष्ट्रवाद के उपाश्रित परिपेक्ष्य को राष्ट्रवादी परिपेक्ष्य के सापेक्ष रख कर इस एक उचित निष्कर्ष के करीब पहुंच सकते हैं। इसी सन्दर्भ में भारत में राष्ट्रवाद को ऐतिहासिक आधार को समझना आवश्यक है। भारत के राष्ट्रवाद की विकास -यात्रा के इतिहास के मूल से ही समझा जा सकता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम राष्ट्रवाद का जीवंत उदाहरण है। यह आंदोलन केवल राजनीतिक आज़ादी के लिए नहीं था, बल्कि भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक, और आर्थिक पुनरुत्थान का प्रतीक भी था। इसने भारतीय समाज को आत्मनिर्भर, आत्मसम्मानित, और स्वाभिमानी बनाया। स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रवाद की यह भावना आज भी भारत के लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष ताने-बाने की नींव है। राष्ट्रवाद आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन का एक प्रमुख स्तंभ है। यह विचारधारा भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक परिवेश तक विविध रूपों में प्रकट हुई है। आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में राष्ट्रवाद का विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है।

भारतीय चिन्तक राष्ट्रवाद को एक गम्भीर आन्तरिक जीवन से स्पन्दित सांस्कृतिक सत्ता मानते रहे हैं। स्वामी दयानन्द, योगीराज अरविन्द घोष, बंकिमचन्द्र चटर्जी, महात्मा गाँधी आदि भारतीय नेताओं ने पाश्चात्य राष्ट्रवाद के उस भौतिक सिद्धांत का खण्डन किया जो इसे पूँजीवाद की एक गौण और विकृत उपज मानता है। महर्षि अरविंद और महात्मा गांधी ने इस प्रक्रिया में अपने अद्वितीय योगदान से भारतीय राष्ट्रवाद को एक गहन आध्यात्मिक और नैतिक आधार प्रदान किया।

महर्षि अरविंद का राष्ट्रवाद राजनीतिक स्वतंत्रता से कहीं अधिक व्यापक था। वे राष्ट्र को एक जीवंत शक्ति मानते थे, जो केवल राजनीतिक इकाई नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक शक्ति भी है। उनका विचार था कि भारत की मुक्ति केवल ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि यह एक संपूर्ण आध्यात्मिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया होनी चाहिए। वे मानते थे कि भारतीय राष्ट्रवाद केवल भौतिक स्वतंत्रता की आकांक्षा नहीं, बल्कि एक दिव्य उद्देश्य की पूर्ति का माध्यम है। उन्होंने अपनी राष्ट्रवादी विचारधारा को योग और आध्यात्मिकता से जोड़ा तथा इसे एक दैवीय कर्तव्य के रूप में प्रस्तुत किया।

महर्षि अरविंद के विचारों का स्वरूप क्रांतिकारी था। प्रारंभिक जीवन में उन्होंने सशस्त्र क्रांति का समर्थन किया और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष को न्यायसंगत ठहराया। उनका मानना था कि स्वतंत्रता केवल याचना से प्राप्त नहीं की जा सकती, बल्कि इसे बलिदान और संघर्ष से अर्जित किया जाना चाहिए। किंतु जब वे आध्यात्मिक मार्ग पर अग्रसर हुए, तो उनका राष्ट्रवाद एक उच्चतर चेतना की ओर उन्मुख हो गया। उनका विश्वास था कि भारत को स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद एक आध्यात्मिक नेतृत्व का केंद्र बनना चाहिए, जो समूचे विश्व को सत्य, धर्म और दिव्यता का मार्ग दिखाए।

महात्मा गांधी का राष्ट्रवाद अहिंसा, सत्याग्रह और नैतिक मूल्यों पर आधारित था। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को केवल राजनीतिक संघर्ष के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे आत्मशुद्धि और सामाजिक परिवर्तन का एक माध्यम माना। गांधीजी का राष्ट्रवाद सर्वसमावेशी था, जिसमें सभी जातियों, वर्गों और समुदायों के लिए समान स्थान था। वे भारत को एक धर्मनिरपेक्ष, समतामूलक और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। उनके विचारों में ग्राम स्वराज, सत्य और अहिंसा की प्रमुख भूमिका थी।

गांधीजी का राष्ट्रवाद महर्षि अरविंद के राष्ट्रवाद से इस मायने में भिन्न था कि वे सशस्त्र क्रांति के स्थान पर अहिंसक संघर्ष के पक्षधर थे। उनका विश्वास था कि यदि भारत को सच्चे अर्थों में स्वतंत्र बनाना है, तो उसे न केवल राजनीतिक बल्कि आर्थिक, सामाजिक और नैतिक रूप से भी सशक्त बनाना होगा। इसीलिए उन्होंने चरखा, खादी और स्वदेशी आंदोलन को राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्र में रखा। उनका मानना था कि आत्मनिर्भरता ही भारत की असली स्वतंत्रता होगी।

गांधीजी का राष्ट्रवाद सार्वभौमिक था, जिसमें न केवल भारत की स्वतंत्रता बल्कि संपूर्ण मानवता के कल्याण की भावना निहित थी। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सत्य और अहिंसा के प्रयोग के रूप में देखते थे, जिसे पूरे विश्व में अपनाया जा सकता है। उनकी विचारधारा का प्रभाव भारत की स्वतंत्रता के बाद भी भारतीय राजनीति, सामाजिक संरचना और नीति निर्माण पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

इस प्रकार गांधी जी राष्ट्रवादी और अन्तर्राष्ट्रवादी दोनों थे। अतः गांधी जी का राष्ट्रवाद संकीर्ण न होकर व्यापक है, वे अपने राष्ट्र का विकास चाहते है; लेकिन किसी दूसरे राष्ट्र को नुकसान पहुँचाकर नहीं, वे अपने राष्ट्र को भी इसलिए स्वतन्त्र कराना चाहते थे ताकि इसके संसाधनों का प्रयोग विश्व कल्याण के लिए हो सके। गांधी जी अपने राष्ट्र के विकास के साथ सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण चाहते थे।

महर्षि अरविंद और महात्मा गांधी दोनों ही भारतीय राष्ट्रवाद के प्रमुख स्तंभ थे, किंतु उनके विचारों में कुछ मौलिक भिन्नताएँ थीं। महर्षि अरविंद का राष्ट्रवाद आध्यात्मिक और रहस्यवादी था, जबकि गांधीजी का राष्ट्रवाद व्यावहारिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित था। अरविंद जहाँ भारत को विश्वगुरु के रूप में स्थापित करना चाहते थे, वहीं गांधीजी भारत को एक आत्मनिर्भर और अहिंसक समाज के रूप में देखना चाहते थे।

महर्षि अरविंद का राष्ट्रवाद एक दैवीय मिशन के रूप में देखा जा सकता है, जिसमें भारत की मुक्ति को संपूर्ण विश्व के आध्यात्मिक उत्थान से जोड़ा गया है। इसके विपरीत, गांधीजी का राष्ट्रवाद स्थानीयता और ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था पर केंद्रित था, जिसमें आत्मनिर्भरता और सामाजिक समरसता की भावना थी। दोनों ही दृष्टिकोण भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण थे और उन्होंने भारत की राजनीतिक चेतना को गहरे स्तर पर प्रभावित किया।

© 2025 सीमा गहलोत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

इस प्रकार आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन में राष्ट्रवाद एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा रही है, जिसमें विभिन्न विचारकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से अपने विचारों का योगदान दिया है। महर्षि अरविंद और महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रवाद के दो प्रमुख स्तंभ थे, जिन्होंने अपनी विशिष्ट विचारधाराओं से राष्ट्र को दिशा दी। एक ओर महर्षि अरविंद ने राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक उन्नति से जोड़ा, तो दूसरी ओर महात्मा गांधी ने इसे नैतिकता, अहिंसा और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों पर आधारित किया।

भारतीय राष्ट्रवाद का यह द्वैत स्वरूप न केवल स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रभावी रहा, बल्कि स्वतंत्र भारत की राजनीति, समाज और संस्कृति को भी गहराई से प्रभावित करता रहा। आज के संदर्भ में भी, जब राष्ट्रवाद की अवधारणा को विभिन्न रूपों में व्याख्यायित किया जा रहा है, तब महर्षि अरविंद और महात्मा गांधी के विचार हमें संतुलित दृष्टिकोण अपनाने और भारतीय समाज को एक सशक्त, आत्मनिर्भर और नैतिक रूप से उन्नत राष्ट्र के रूप में विकसित करने की प्रेरणा देते हैं।

महात्मा गांधी और महर्षि अरविन्द के राष्ट्रवाद की तुलना:

भारतीय राष्ट्रवाद अपने स्वरूप में पश्चिमी राष्ट्रवाद से भिन्न है। यह केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का आंदोलन नहीं था, बल्कि एक सांस्कृतिक, नैतिक और आत्मिक पुनर्जागरण की एक प्रक्रिया थी। भारतीय राष्ट्रवादी चिंतन के विकास में महात्मा गांधी और श्री अरविन्द ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। दोनों चिंतकों का प्रमुख उद्देश्य भारत की स्वतंत्रता और इसका पुनरुत्थान करना था, किंतु उनके राष्ट्रवाद के संदर्भ में दृष्टिकोण, मार्ग और राष्ट्र की परिकल्पना में उल्लेखनीय भिन्नता विद्यमान थी। गांधीजी का राष्ट्रवाद नैतिकता, अहिंसा और ग्राम स्वराज पर आधारित था, जबकि श्री अरविन्द का राष्ट्रवाद आध्यात्मिक चेतना, सांस्कृतिक एकता और भारतीयता की पुनर्स्थापना से जुड़ा हुआ था।

महात्मा गांधी का राष्ट्रवादी दृष्टिकोण देखें तो उनका राष्ट्रवाद मूलतः सत्य, अहिंसा और सर्वधर्म समभाव पर आधारित राष्ट्र का निर्माण था। वे भारत को एक आत्मनिर्भर, नैतिक और धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। गांधीजी हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रबल समर्थक थे। वे धर्म को व्यक्तिगत आस्था का विषय मानते थे और इसे राजनीति से दूर रखना चाहते थे। गांधीजी के अनुसार, स्वराज का अर्थ केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि आत्मानुशासन और आत्मा की भी मुक्ति है। उन्होंने कहा था कि "स्वराज का अर्थ है आत्म-नियंत्रण और नैतिक स्वतंत्रता।"[7] उन्होंने राष्ट्रवाद को संघर्ष के हथियार नहीं, बल्कि इसे सेवा के माध्यम के रूप में अपनाया। सत्याग्रह और असहयोग आंदोलन जैसे साधन उनके शांतिपूर्ण राष्ट्रवाद के प्रतीक रहे। गांधीजी के लिए भारत का हृदय गांवों में निवास करता है और उसके विकास के लिए उन्होंने ग्राम आधारित स्वराज अर्थात विकेन्द्रित शासन प्रणाली का समर्थन किया। साथ ही, उनका राष्ट्रवाद 'सर्वोदय' अर्थात सभी लोगों का सर्वांगीण कल्याण पर आधारित था।

श्री अरविन्द का राष्ट्रवाद आध्यात्मिक-सांस्कृतिक वैचारिकता पर आधारित था। वे भारत को केवल एक भौगोलिक क्षेत्र ही नहीं मानते थे, बल्कि उसे एक जीवंत देवी का रूप मानते थे जिसे उन्होंने 'भारत माता' की संज्ञा दी थी।[8] उनके राष्ट्रवादी विचारों में वीरता, आत्म-चेतना और सनातन धर्म की गहरी भावना समाहित थी। श्री अरविन्द ने भारत को एक शक्तिशाली चेतन सत्ता के रूप में देखते हुए बंदे मातरम में लिखा था कि "भारत धरती का एक टुकड़ा नहीं है, न ही एक अलंकार है, बल्कि एक महान शक्ति है।"[9] इसी आधार पर महर्षि अरविन्द ने अपने राष्ट्रवाद को आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का स्वरुप दिया।

उनका राष्ट्रवाद केवल साधारण राजनीतिक विचार नहीं था, बल्कि वह योग और आत्मचिंतन से जुड़ा था। वे मानते थे कि भारत की मुक्ति तभी संभव है जब लोग आत्मिक रूप से जाग्रत होंगे। श्री अरविन्द ने पश्चिमी सभ्यता की नकल का विरोध किया। उनका मानना था कि भारतीय राष्ट्रवाद को उसकी संस्कृति, धर्म और अध्यात्म से प्रेरणा लेनी चाहिए। इसे उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की संज्ञा दी।

गांधीजी के अहिंसक मार्ग से विपरीत, श्री अरविन्द ने अपने प्रारंभिक काल में देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सशस्त्र क्रांति का समर्थन किया। उनका मानना था कि जब अन्य मार्ग असफल हो जाएँ, तब न्याय के लिए हिंसा भी धर्म हो सकती है। हालांकि बाद में उन्होंने इसे त्याग दिया। राष्ट्रवाद के आधार के संदर्भ में गांधीजी का राष्ट्रवाद अहिंसा, नैतिकता और ग्राम स्वराज पर आधारित था। जबकि महर्षि अरविन्द का राष्ट्रवाद आत्मिक चेतना, धर्म और संस्कृति पर आधारित था।

गांधीजी ने अपने राष्ट्र की परिकल्पना ग्रामों के आत्मनिर्भर समूह के रूप में की थी। जबकि महर्षि अरविन्द ने इसे भारत माता की संज्ञा देते हुए एक दिव्य चेतना का स्वरुप बताया था। गांधीजी धर्म के संदर्भ में सर्वधर्म समभाव पर विश्वास करते थे और उनका मुख्य जोर धर्मनिरपेक्षता पर आधारित राष्ट्र का निर्माण करना था। जबकि महर्षि अरविन्द ने सनातन धर्म पर बल देते हुए भारत के सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना पर बल दिया।

गांधीजी के राष्ट्रवाद का उद्देश्य जनकल्याण और आत्म नियंत्रण में निहित था। जबकि महर्षि अरविन्द के राष्ट्रवाद का ध्येय भारत का आध्यात्मिक उत्थान करना और इसे विश्वगुरु के रूप में पुनर्स्थापित करना था।

इस प्रकार महात्मा गाँधी और महर्षि अरविन्द के राष्ट्रवादी विचारों में कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएं विद्यमान थी किंतु दोनों मनीषियों का इस संदर्भ में उद्देश्य एक समान ही था- देश की स्वतंत्रता और उसका सांस्कृतिक पुनरुत्थान करना।

समानताएँ:

- दोनों का राष्ट्रवादी दृष्टिकोण भारत केंद्रित था और दोनों ही भारत की आत्मा, संस्कृति और मूल्यों में विश्वास रखते थे।
- दोनों विचारकों ने पश्चिमी विचारों की सीमित स्वीकृति प्रदान की और पश्चिमी सभ्यता की अंधाधुंध नकल की आलोचना की और भारतीय परंपरा संस्कृति को प्राथमिकता दी।

[7] Collected Works of Mahatma Gandhi, Vol. 90.

[8] यादव, ममता. (2016). महर्षि अरविंदो के दर्शन में आध्यात्मिक राष्ट्रवाद एवं स्वराज्य. जर्नल ऑफ आचार्य नरेंद्र देव इंस्टिट्यूट, पृ.102-106.

[9] श्री अरविन्द. (1907). बंदे मातरम, पृ.5-6.

© 2025 सीमा गहलोत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- दोनों ने अपने राष्ट्रवाद को लोगों की सेवा और उनके उत्थान से जोड़ा गांधी के लिए राष्ट्रसेवा का अर्थ था– कमजोरों, गरीबों और असहायों की सेवा। जबकि अरविन्द के लिए लोगों की आत्मा का उत्थान।
- दोनों विचारक राजनीतिक मुक्ति से आगे की सोच रखते थे। दोनों मानते थे कि केवल शासन और सत्ता में परिवर्तन करने से कुछ नहीं होगा, जब तक व्यक्ति और समाज आत्म-चेतन और जाग्रत नहीं होंगे।

इस प्रकार महात्मा गांधी और श्री अरविन्द दोनों भारतीय राष्ट्रवाद के दो महान स्तंभ हैं। गांधीजी ने जहाँ राष्ट्र को एक नैतिक संस्था के रूप में देखा। वहीं, श्री अरविन्द ने राष्ट्र को एक आध्यात्मिक शक्ति के रूप में पहचाना। गांधी का राष्ट्रवाद जन-आधारित, अहिंसक और नैतिक था। जबकि अरविन्द का राष्ट्रवाद संस्कृति-प्रधान, आत्मिक और प्रेरणात्मक था।

आज के समकालीन भारत में इन दोनों महान विचारकों के राष्ट्रवादी विचारों की संयुक्त आवश्यकता है जिसमें गांधीजी की सहिष्णुता, नैतिकता, धर्मनिरपेक्षता और मानवता और श्री अरविन्द की आत्मिक जागरूकता, सांस्कृतिक गौरव और आध्यात्मिक दृष्टिकोण आदि शामिल हैं। जब दोनों दृष्टिकोण एक साथ कार्य करेंगे हैं, तभी एक सशक्त और संतुलित राष्ट्रवाद का उदय होगा जो केवल सत्ता को ही नहीं बल्कि, व्यक्ति की आत्मा को भी स्वतंत्र करने का कार्य करेगा।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. सईद, एडवर्ड. ओरिंटलिज़्म. लंदन: पेंगुइन; 1977.
2. Gellner E. Nations and Nationalism. New York: Cornell University Press; 1983.
3. Anderson B. Imagined Communities. London: Verso; 1983.
4. Hobsbawm E, Ranger T. The Invention of Tradition (Introduction). Cambridge: Cambridge University Press; 1983.
5. रेनन, ई. वॉट इज अ नेशन? (एम. थॉम, अनुवादक). इन: भाभा एच.के., सं. नेशन एंड नरेशन. न्यूयॉर्क: रूटलेज; 1990.
6. Chatterjee P. The Nation and Its Fragments: Colonial and Postcolonial Histories. Princeton: Princeton University Press; 1993.
7. शर्मा, ब्रह्म दत्त. गांधी एवं भारतीय राष्ट्रवाद. जयपुर: रचना प्रकाशन; 2020.
8. Holbraad C. Inter-nationalism and Nationalism in European Political Thought. New York: Springer; 2003.
9. Smith AD. Nationalism: Theory, Ideology and History. London: Polity Press; 2001.
10. Mill JS. Of Nationality. In: Nation and Nationality: Three Essays. Delhi: Critical Quest; 2010.
11. Steven. Nationalism: A Very Short Introduction. New York: Oxford University Press; 2005.
12. Gellner E. Nations and Nationalism. 2nd ed. New York: Cornell University Press; 2008.
13. कुमार, सुनलिनी. नेशनलिज्म इन पॉलिटिकल थ्योरी. इन: भार्गव, राजीव; आचार्य, अशोक, संपा. दिल्ली: पियरसन; 2008.
14. गांधी, एम. के. हिंद स्वराज. दिल्ली: राजपाल एंड संस; 2009.
15. Smith AD. Ethno-symbolism and Nationalism: A Cultural Approach. London: Routledge; 2009.
16. Sutherland C. Nationalism in the Twenty-First Century. New York: Palgrave Macmillan; 2012.
17. हबीब, इरफान. नेशनलिज्म इन इंडिया: पास्ट एंड प्रेजेंट. सोशल साइंटिस्ट. 2017 मार्च-अप्रैल;45(3-4):3-8.
18. हबीब, इरफान. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और राष्ट्रवाद. दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2023.
19. मिश्रा, विश्वनाथ. भारतीय राष्ट्रवाद: राष्ट्रवाद का अवधारणात्मक वि-औपनिवेशीकरण. दिल्ली: डी. के. पब्लिशिंग हॉउस; 2022.
20. ब्रजमोहन. इंटरप्रेटिंग नेशनलिज्म इन दी इंडियन कॉन्टेक्स्ट. इंडियलोग्स. 2023;10:125-134.
21. Biswas D, Ryan JC. Nationalism in India: Texts and Contexts. Delhi: Routledge; 2023.
22. नंदी, ए. दी कल्चर ऑफ इंडियन पॉलिटिक्स: अ स्टॉक टेकिंग. जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज. 1970 नव.;30(1):57-79.
23. चंद्र, बिपिन. दी राइज एंड ग्रोथ ऑफ़ इकोनॉमिक नेशनलिज्म इन इंडिया. दिल्ली: हर आनंद पब्लिकेशन्स; 2012.
24. Breuilly J. Nationalism and the State. New York: St. Martin's Press; 1982.
25. Greenfeld L. The Spirit of Capitalism: Nationalism and Economic Growth. Cambridge, MA: Harvard University Press; 2001.
26. हबीब, इरफान. भारत में राष्ट्रवाद: अतीत और वर्तमान. सोशल साइंटिस्ट. 2017 मार्च-अप्रैल;45(3-4):4-8.
27. Jaffrelot C. Hindu Rastravadi Andolan aur Bharatiya Rajneeti. Delhi: Penguin Books; 1999.
28. Greenfeld L. Nationalism: Five Roads to Modernity. Cambridge, MA: Harvard University Press; 1993.
29. देसाई, ए. आर. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि. नई दिल्ली: सेज इंडिया; 2018.
30. यादव, ममता. महर्षि अरविंदो के दर्शन में आध्यात्मिक राष्ट्रवाद एवं स्वराज्य. जर्नल ऑफ आचार्य नरेंद्र देव इंस्टिट्यूट. 2016;102-106.
31. शुक्ला, रवि रमेश चंद्र. दी कल्चरल आइडेंटिटी ऑफ़ कंटेम्परेरी इंडियन नेशनलिज्म. इंडिया फाउंडेशन मोनोग्राफ. 2024 जनवरी;6:1-72.
32. Gandhi MK. Collected Works of Mahatma Gandhi. Vol. 90. Publications Division, Government of India.
33. गांधी, एम. के. हिंद स्वराज. अहमदाबाद: नवजीवन प्रकाशन; 1909.
34. Sri Aurobindo. The Ideal of Human Unity. Pondicherry: Sri Aurobindo Ashram; 1930.
35. Vinod MJ, Thomas V. Contemporary Debates on Nationalism. J Polity Soc. 2023;15(2):35-46.
36. Sri Aurobindo. Bande Mataram Writings, 1906–1908.

© 2025 सीमा गहलोत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

37. Heehs P. The Lives of Sri Aurobindo. New York: Columbia University Press; 2008.
38. Brown J. Gandhi: Prisoner of Hope. New Haven: Yale University Press; 1991.
39. Dash SC. Nature and Significance of Indian Nationalism. Indian J Political Sci. 1958;19(1):63-72.
40. Dubey M. The Nationalism Debate: Past and Present. Indian J Public Adm. 2017;63(1):1-12.
41. Gnaneshwari G. Bal Gangadhar Tilak and His Philosophy of Nationalism. Imperial J Interdiscip Res. 2017;3(1):1521-1524.
42. Hardiman D. Gandhi in His Time and Ours. Delhi: Permanent Black; 2003.
43. Jaffrelot C. Hindu Nationalism. Delhi: Permanent Black; 2007.
44. Kohn H. The Idea of Nationalism: A Study in its Origins and Background. 3rd ed. New York: Macmillan; 1946.
45. Nanda SK. Cultural Nationalism in a Multi-National Context: The Case of India. Sociol Bull. 2006;55(1):24-44.
46. Singh K. Aurobindo: The Revolutionary. Indian Int Centre Q. 1990-1991;17(3-4):122-129.
47. Smith A. Ethno-symbolism and the Study of Nationalism. In: Spencer P, Wollman H, editors. Nations and Nationalism. Edinburgh: Edinburgh University Press; 2005.
48. Tagore RN. Nationalism. Norwood, USA: Norwood Press; 1917.
49. Vinod MJ, Thomas V. Contemporary Debates on Nationalism. J Polity Soc. 2023;15(2):35-46.
50. Nath S. Indian Nationalism through the Gandhian Prism. Int J Humanit Soc Sci Manag. 2023 Jan-Feb;3(1):302-306.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 सीमा गहलोत. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/